Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 16 May 2018 17:25

: □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ : □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ : □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□:□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ : □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ :□ □□□□ □□□ -□□ :

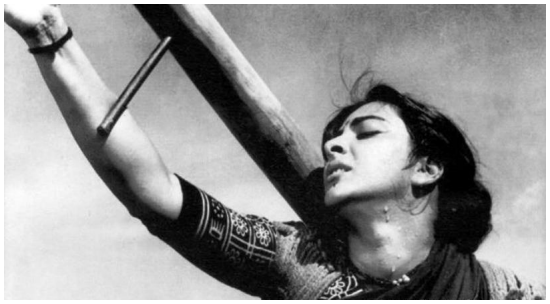

□□□□□ □□□□□

□□□□ : चार दिन बीत गये हैं, लेकिन मातृ दिवस को लेकर अब तक यह समझ में नहीं आ रहा है कि क्या सोचा, छांटा और लिखा जा□□

ऐसा नहीं कि लिखने के लि□ कोई बहुत महत्वपूर्ण बात ही नहीं है□ ज□ यादातर बात हमेशा छोटी ही होती है, हमारी समझ उसे छोटी या बड़ी बनाती है□ खासकर मानवीय संदर्भ में तो यही शर्त लागू होती है□ हमें खोजना होता है उसके अंतर-विषय को, कि हम किस गहराई तक पहुंचा और देख सक्ते हैं□ आम आदमी की सम्वेदनाओं को प्रभावित करने का जिम्मा संभाले लेखकों, चिंतकों और पत्रकारों की जिम्मेदारी होती है कि वह ऐसे मौके खोजें, उनका छिद्रान्वेषण करें और उन्हें व्याख्यायित कर जनसाधारण तक पहुंचा दें□

दिक्कत तब होती है जब किसी लेखक के पास लिखने के लि□ विषयों का बेशुमार भंडार तो हो, लेकिन उसकी लेखनी और वाणी स्तब्ध हो सन्नपिात की हालत तक पहुंच चुकी हो, जुबान और दिमाग सुन□ न हो जा□□ आप लिखना तो चाहें, लेकिन लिख नहीं पाते हालत किसी भी और अवसाद की हालत से कम नहीं होती□ मेरे पास भी कई गहरे मसले हैं जो घटनाओं के स्तर पर बेहद मार्मिक होने के चलते समाज को गहरे तक प्रभावित कर सक्ते हैं□ ऐसे भी नहीं, ये इतने पीड़ाजनक भी हैं कि उसे सुन कर आम आदमी अपना चेहरा भी न छुपा पा□ गा□

खैर, विलम्□ ब के लि□ आप सभी से दिल से और संवेदना रूप से भी क्षमा याचना चाहता हूं कि मैंने इतना विलंब कर दिया□ साथ ही संकल्प भी लेता हूं कि आइंदा ऐसा नहीं होगा□ तो दोस्तों, मेरे पास फिलहाल तीन प्रमुख घटना□ है, जिनसे मैं शुरूआत करने की इजाजत चाहता हूं□ पहले तो झांसी की □क महिला की घटना है□ इस महिला ने भरी अदालत में □क ऐसा सच कुबूल कर लिया, जो भले ही उसको आजीवन कारावास तक पहुंचा सके लेकिन उसके इस सच ने हमारे समाज को उसकी सभ्यता उसकी संवेदनशीलता उसकी भावुक्ता और उसकी असल औकात चिंदी-चिंदी तार-तार कर डाला□ इस श्रंखला के पहले अंक में हम उस घटना का जिक्र करेंगे□

बाकी दूसरी और तीसरी घटना□ं हमारे परविार से जुड़ी हुई हैं□ इनमें हमने भरसक ऐसे माहौल को दखिाने की कोशशि की है जसि समाज सामान्य तौर पर उचति-अनुचति के दायरे में कस लेता है, लेकनि मैं उस पूरे माहौल के पूरे संयमति भाव शब्दों में जगजाहरि करने की कोशशि करूंगा□

इसमें मैं मेरी ननहिाल में सबसे बड़ी मौसी से लेकर उनके पूरे जीवन-काल का कस्सिा बयान करूंगा, जो इस वक्त भले ही मुंबई के □क ओल्ड-□ज होम में अपनी अंतमि सांसें ले रही हैं, लेकनि उस महलिा ने 70 साल पहले जसि जजिीवषिा का प्रदर्शन कयिा था वह बेमसिाल था□ इतहिास में यह घटना□ं भले ही दर्ज न हो पायें, लेकनि बहराइच और गोंडा जैसे बेहद पछिड़े इलाकों में आज स्□त्री-सशक्□तीकरण की ज्□वाला आपको धधकती दखि रही है, उसका श्रेय अगर कसिी □क व्□यक्त पिर है□ और वह हैं मेरी मौसी□ नाम है सुशक्षिा अनुपम मशि्र□

श्रृंखला के चौथे अंक में मैं खुद अपनी मां के साथ जुड़े कुछ कस्सिे बयान करना चाहता हूं जो कसिी भी महलिा के अंतरंग वस्त्रों से जुड़े हैं□ याद पुरानी शायद 50 साल पहले की है, तब कसिी भी स्त्री या महलिा का अपने अंतरंग वस्त्र का तनकि भी दखि पड़ जाना ही उसके अभद्र, अश्□लील, चालू व्□यवहार का स्□वत: प्रदर्शन माना जाता था□

□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

[□□□□□ □□□□]